Downloaded from www.studiestoday.com

अन्तरा - काव्य खण्ड (आधुनिक)

जय शंकर प्रसाद

(क) देवसेना का गीत

आह वेदना .... लाज गंवाई।

मूल भाव :- 'देवसेना की गीत' प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक से लिया गया है। मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन देवसेना स्कंदगुप्त के प्रेम निराश होकर जीवन भर भ्रम में जीती रही तथा विषम परिस्थितियों में संघर्ष करती रही। इस गीत के माध्यम से वह अपने अनुभवों में अर्जित वेदनामय क्षणों को याद कर जीवन के भावी सुख, आशा और अभिलाषा से विदा ले रही है।

व्याख्या बिन्दु :- देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन है। बंधुवर्मा की वीरगति के उपरांत देवसेना राष्ट्रसेवा का व्रत लेती है। वह यौवनकाल में स्कंदगुप्त को पाने की चाह रखती थी, किंतु स्कंदगुप्त मालवा के धनकुबेर की कन्या विजया की ओर आकर्षित थे। देवसेना जीवन में नितांत अकेली हो जाती है और गाना गाकर भीख माँगती है। जीवन के अंतिम पड़ाव पर भी देवसेना को वेदना ही मिली। स्कंदगुप्त को पाने में असफल होने के कारण निराशा भरा जीवन व्यतीत किया। यौवन क्रियाकलापों को वह भ्रमवश किए गए कर्म मानती है, इसलिए उसकी आँखो से निरंतर आँसुओं की धारा बह रही है। यौवनकाल में स्कंदगुप्त को न पाकर, अपने प्रेम को वह भूल चुकी है। स्कंदगुप्त के प्रणयनिवेदन से वह स्वप्न देखने लगती है। उसे लगता है कि परिश्रम से उत्पन्न थकान के कारण जैसे कोई यात्री सघन वन के वृक्षों की छाया में नींद से भरा हुआ स्वप्न देख रहा हो और कोई उसके कान में अर्धरात्रि में गाए जाने वाला विहाग राग सुना रहा हो। स्कंदगुप्त के प्रणय-निवेदन से उसे लगता है कि उसने अपने समस्त श्रमफल को खो दिया है। उसकी प्रेमरूपी पूँजी कहीं खो गई है। वह स्कंद गुप्त के निवेदन को ठुकरा देती है। वह जानती है कि अच्छे भविष्य की कल्पना व्यर्थ है, फिर भी उसके हृदय में मधुर कल्पनाएँ जन्म लेती है। वह भावी सुख की आशा करती है, इसलिए अपनी आशा का बावली कहती है। वह अपनी दुर्बलताओं को जानती है और यह भी कि उसकी हार निश्चित है, फिर भी वह प्रलय से मुकाबला करती है। विषम परिस्थितियों से संघर्ष करती है और पराजय स्वीकार नहीं करती। अंत में देवसेना संसार को संबोधित करती हुई कहती है कि तुम अपनी धरोहर (प्रेम) वापस ले लो, वह इसे संभाल नहीं पायेगी। उसका जीवन करूणा और वेदना से भर गया है। वह मन ही मन लज्जित है।

शिल्प सौन्दर्य :- खड़ी बोली तत्सम शब्दावली, अनुप्रास अंलकार, उपमा (आँसू से), रूपक अंलकार

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

– (जीवन–रथ), पुनरूक्ति प्रकाश – (छलछल, हा–हा), मानवीकरण – ' प्रलय चल रहा अपने पथ पर विरोधाभास – हारी होड़। मुक्त छंद।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न – 'मैने निज दुर्बल .... होड़ लगाई' इन पंक्तियों में 'दुर्बल पद बल' और 'हारी होड़' में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

– कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

– मैने भ्रमवश जीवन–संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

– देवसेना की हार या निराशा के क्या कारण थे?

(ख) व्याख्या

श्रमित स्वप्न .... सकल कमाई ।

(ग) काव्य सौन्दर्य

अ) चढ़कर मेरे .... हारी–होड़ लगाई।

ब) लौटा लो .... लाज गंवाई।

(ख) कार्नेलिया का गीत

अरूण यह .... रजनी भर तारा।

मूल भाव – 'कार्नेलिया का गीत' जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' से लिया गया है। सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी कार्नेलिया इस गीत के माध्यम से भारत देश की गौरव गाथा, प्राकृतिक सौन्दर्य और संस्कृति का गुणगान कर रही है।

व्याख्या बिन्दु – सिंधु नदी के तट पर बैठी कार्नेलिया कहती है कि भारत देश मिठास एवं लालिमा अर्थात् उत्साह से परिपूर्ण है। इस देश में सूर्योदय का दृश्य अत्यंत आकर्षक एवं मनोहारी है। यहाँ पहुँच कर अनजान क्षितिज को भी सहारा मिल जाता है। अर्थात दूर अनजान देशों से आये यात्रियों को भी भारत आश्रय देता है। सूर्योदय के समय तालाबों में कमल के फूल खिलकर अपनी आभा बिखेर देते हैं तो सूर्य की किरणें उन पर नृत्य करती सी प्रतीत होती है। यहाँ का जीवन सुन्दर, सरल एवं मनोहारी दिखाई देता है। भारत की हरियाली से युक्त भूमि पर सूर्य की लालिमा ऐसी लगती है जैसे सर्वत्र मांगलिक कुमकुम बिखरा हुआ हो। प्रात:काल मलय पर्वत की शीतल, मंद, सुगंधित पवन का सहारा लेकर इंद्रधनुष के समान सुंदर पंखो को फैला कर पक्षी भी जिस ओर मुँह करके उड़ते दिखाई देते हैं, वही उनके घोसलें हैं अर्थात् वे भारत को ही अपना घर मानते है, यहाँ उन्हें शांति मिलती है। जैसे बादल गर्मी से मुरझाऐं पेड़–पौधो पर अपने जल की वर्षा कर जीवनदान देते हैं, उसी तरह यहाँ के लोग अपनी आँखो से करूणा रूपी जल बहाकर निराश और उदास लोगो के मन में नव आशा का संचार कर जीवन की प्रेरणा देता है। विशाल समुद्र की लहरें भी भारत के किनारों से टकरा शांत हो

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

जाती है, उन्हें भी यहाँ विश्राम मिलता है। रात भर जागते हुए तारे प्रातःकाल होने पर उन्हें भी मस्ती से ऊँघते दिखाई देते है अर्थात् छिपने की तैयारी करते हैं तब ऊषा रूपी नायिका सूर्य रूपी सुनहरें कलश में सुख रूपी जल लेकर आती है और भारत-भूमि पर लुढ़का देती है अर्थात् प्रातःकाल होने पर भारतवासी सुखी, समृद्ध एवं खुशहाल दिखाई देते है।

शिल्प-सौंदर्य - भाषा खड़ी बोली, तत्सम् शब्दावली, अलंकार-अनुप्रास, मानवीकरण (तरूशिखा उषा, तारे) उपमा (लघु सुरधनु से), रूपक (हेम-कुंभ), दृश्य-विम्ब, गेयता तथा संगीतात्मकता, प्रकृति-चित्रण

अभ्यास-कार्य

(क) प्रश्न

1.कार्नेलिया का गीत में भारत वर्ष की क्या-क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

2. 'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखो के बादल' में क्या अर्थ व्यंजित होता है?

3. 'जहां पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा' पंक्ति का आशय स्पष्ट करो।

(ख) व्याख्या - अरूण यह मधुमय .... रजनी भर तारा ।

(ग) काव्य-सौन्दर्य - हेम कुंभ ले उषा .... रजनी भर तारा।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(क) गीत गाने दो मुझे

गीत गाने दो .... फिर सीचंने को।

मूल भाव - इस कविता में कवि ऐसे समय की ओर संकेत कर रहा है जब हर ओर निराशा ही निराशा ही निराशा व्याप्त है। वह निराशा में आशा का संचार करना चाहता है।

व्याख्या बिन्दु :- कवि कहता है कि जीवन में निरंतर बढ़ती हुई पीड़ा अथवा दु:ख को कम करने के लिए, उसे भुलाने के लिए उसे गीत गाने दो। गीत हृदय की अनुभूतियाँ है। ये वेदना की तीव्रता को भुला सकते हैं, दु:खों को कम कर सकते है। जीवन-मार्ग पर चलते हुए हर कदम पर चोट खाते-खाते और संघर्ष करते-करते होश वालों के भी होश छूट गए है। अर्थात् अब जीना आसान नहीं रह गया है। जीने के लिए जो भी था, मूल्यवान था, उसे छल-कपट से उन मालिकों ने रात के अंधकार में (संकट के समय) लूट लिया, जिन पर भरोसा था। अब पीड़ा सहते सहते कंठ रूकने लगा है, ऐसा लगता है कि सामने काल आ रहा है। अब जीना कठिन हो गया है। लोग कुछ कह नहीं पा रहे हैं। इस निराशा भरे वातावरण में कवि गीत गाना चाहता है ताकि व्यथा को रोका जा सके। कवि कहता है कि संसार हार मानकर स्वार्थ और अविश्वास के जहर से भर गया है। संसार से सहानुभूति, करूणा, उदारता, सहयोग, भाईचारा, आदि भावनाएँ लुप्त हो चुकी हैं। अब लोग आपस में एक दूसरे को अपरिचित निगाहों से देख रहे हैं। मानवता हाहाकार कर रही हैं। लोगों में जीने की इच्छा मर चुकी है। संसार में एकता, समता, सहानुभूति तथा प्रेम की लौ बुझ गई है। कवि मानवता की बुझती लौ को फिर से जलाने के लिए स्वयं जलना चाहता है। वह ऐसे गीत गाना चाहता है जो संसार में फैली निराशा में आशा का संचार कर सके।

शिल्प सौन्दर्य :- खड़ी बोली, अनुप्रास अलंकार (गीत-गाने, ठग-ठाकुर, लोग लोगों), मुहावरों का प्रयोग (होश छूटना, जहर से भरना), लयात्मकता तथा संगीतात्मकता, प्रतीकात्मकाता, लाक्षणिकता, मुक्त छंद, ठग-ठाकुर शोषक का प्रतीक है।

अभ्यास कार्य

प्रश्न :- (1) 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' गीत क्यों गाना चाहते है?

(2) ठग-ठाकुरों से कवि का संकेत किसकी ओर है?

(3) ठग-ठाकुरों ने किससे क्या लूट लिया है?

(4) 'जल उठो फिर सीचनें को' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

(5) 'गीत गाने दो मुझे' कविता दुख और निराशा से लड़ने की शक्ति देती है -स्पष्ट कीजिए।

(ख) व्याख्या - चोट खाकर .... फिर सींचने को

(ग) काव्य-सौन्दर्य- भर गया है .... फिर सींचने को।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(ख) सरोज-स्मृति

देखा विवाह .... तेरा तर्पण।

मूल भाव :- 'सरोज स्मृति' कविता कवि निराला की दिवंगत पुत्री पर केंद्रित है। इस कविता के माध्यम से निराला का जीवन-संघर्ष एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष, समाज से उसके संबंध तथा पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अकर्मण्यता बोध भी प्रकट हुआ है।

कवि अपनी स्वर्गीया पुत्री सरोज को संबोधित करते हुए कहता है कि तेरा विवाह सभी प्रकार की रूढ़ियों से मुक्त सर्वथा नवीन पद्धति से हुआ था। विवाह के समय कवि माता-पिता दोनों के कर्तव्य निभा रहा था। कवि कहता है कि पवित्र कलश के जल से तेरा स्नान कराया गया तब तू मुझे मंद मुस्कुराहट के साथ देख रही थी। ऐसा लगता था कि तेरे होंठों में बिजली की चमक फंसी हो। तुम्हारे हृदय में पति की सुंदर छवि थी। यह बात तुम्हारे श्रृंगार में मुखरित हो रही थी। विवाह के समय तेरा विश्वास तेरे उच्छ्वासें के साथ-साथ अंग-अंग में झलक रहा था अर्थात् तू अपने विवाह के समय पूर्ण आश्वस्त तथा प्रसन्न दिखाई दे रही थी। लज्जा व संकोच से झुकी हुई तेरी आँखों में एक नया प्रकाश उभर आया था, तेरे होंठों पर स्वाभाविक कंपन था। उस समय मेरे वसंत की प्रथम गीति का प्यास उस मूर्ति में साकार हो उठी थी। कवि कहता है मैंने अपनी कविताओं में सौदर्य के जिस निराकार भाव को अभिव्यक्त किया था, वह तुम्हारे रूप-सौन्दर्य में साकार हो उठा था। कविताओं में वही रस की धारा बनकर प्रवाहित होता रहता था। श्रृंगार के जिस गीत को मैनें अपनी स्वर्गीय पत्नी के साथ मिलकर गाया था, वह आज भी मेरे प्राणों में अनुरागपूर्ण उत्साह का संचार कर रहा है। ऐसा लगता है कवि की पत्नी का आलौकिक सौन्दर्य आकाश से उतरकर पुत्री सरोज के रूप में पृथ्वी पर आ गया हो। तेरा रूप सौन्दर्य कामदेव की पत्नी रति के समान अवर्णनीय था। तेरा विवाह संपन्न हो गया। इस विवाह में कोई आत्मीय जन नहीं थे, न ही उन्हें कोई निमंत्रण भेजा गया था। विवाह अत्यंत सादगी के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह में रात्रि जागरण नहीं हुआ न ही विवाह गीत गाए गये, न कोई चहल-पहल हुई। सर्वत्र एक मौन संगीत समाया हुआ था जो तुम्हारे नव जीवन में उतर आया था। कवि कहता है कि माँ के अभाव में मैंने तुझे वे सभी शिक्षाएँ दी जो माताएँ अपनी पुत्री को देती है। मैनें ही तेरी पुष्प सेज को भी तैयार की। उस समय कवि को कण्व ऋषि की पालित पुत्री शकुन्तला की याद आ गई वह भी माँ विहीन थी। किंतु उस घटना तथा यहाँ की स्थिति में अन्तर है। नानी की स्नेहमयी गोद में आ गई अर्थात तू नानी के पास आ गई। मामा-मामी का भरपूर स्नेह मिला। उन्होनें तुझ पर स्नेह की वर्षा उसी प्रकार की जिस प्रकार बादल धरती पर जल बरसाते हैं। वे सदा तेरे रक्षक और हित चिंतक बने रहे। वे सदा तेरे कामों में लगे रहे। तेरी माँ उस कुल की लता थी, जहाँ तू कली के रूप में खिली तथा फली-फूली तथा तेरा पालन-पोषण हुआ। अंत समय तू उसी गोद अर्थात् नानी की गोद में आ गई थी और तूने सदा-सदा के लिए मृत्यु का वरण कर अपनी आँखे मूंद ली थी। कवि कहता है कि मैं तो सदैव से भाग्यहीन था। तू ही मेरा एकमात्र सहारा थी। युग के बाद जब तू मुझसे बिछुड़ गई तो दु:ख मेरे जीवन की कथा बन गयी। मेरे जीवन में सदैव दु:ख ही भरा रहा कभी सुख देखने को नहीं मिला। जीवन में मिले दु:खों और अभावों के कारण कवि अपनी पुत्री के प्रति कर्तव्यों का पालन नहीं कर पाया। वह पश्चाताप करते हुए कहता है कि मेरे कवि कर्मों पर वज्रपात

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

हो जाए तब भी मेरा सिर श्रद्धा से झुका रहेगा। अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए मेरे समस्त सत्कार्य शीतकाल में पाला पड़ने से कमल की तरह नष्ट हो जाएं तब भी कोई चिंता नहीं है। मैं अपने विगत जीवन के सभी कार्यो का फल तुझे अर्पित कर तेरा तर्पण कर रहा हूँ अर्थात् तेरा श्राद्ध कर रहा हूँ। तेरे प्रति यही मेरी श्रद्धांजलि है।

शिल्प-सौन्दर्य - भाषा-खड़ी बोली, संस्कृतनिष्ठ शब्दावली, अलंकार-अनुप्रास (नतनयनों, रागरंग, रतिरूप, सदा समस्त), पुनरूक्ति प्रकाश (अंग-अंग, थर-थर-थर) मानवीकरण (मूर्ति-धीति) उत्प्रेक्षा एवं उदाहरण (भरे जलद..... अपार) उपमा (शीत के से शतदल) रूपक (आकाश .... मही)

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1 :- 'मेरे बसंत की प्रथम गीति', के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

2. आकाश बदलकर बना मही में 'आकाश' और 'मही' शब्द किसकी और संकेत करते है?

3. 'वह लता वहीं की जहाँ कली तू खिली, स्नेह से हिली, पली', पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है?

4. शकुन्तला के प्रसंग के माध्यम से कवि निराला क्या संकेत करना चाहते हैं?

5. कवि निराला की श्रृंगारिक कल्पना किस रूप में साकार हुई हैं? सरोज स्मृति कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

6. कवि निराला की सरोज-स्मृति कविता आम आदमी के जीवन संघर्षो से किस प्रकार मेल खाती है?

(ख) **व्याख्या** - मुझ भाग्यहीन .... तेरा तर्पण।

(ग) **काव्य सौन्दर्य** - माँ की कुल .... अन्य कला।

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सच्चिदानंद हीरानंद वातस्यायन 'अज्ञेय'

(क) यह दीप अकेला

यह दीप .... पंक्ति को दे दो।

मूल भाव – 'यह दीप अकेला' कविता में दीप के माध्यम से कवि व्यक्तिगत सत्ता को सामाजिक सत्ता से जोड़ने की बात कर रहा है। मनुष्य में अतुलनीय सहनशीलता और संघर्ष की क्षमता है। समाज में उसके विलय से समाज और राष्ट्र मजबूत होगा।

व्याख्या बिन्दु – दीप अकेला होने के बावजूद प्रेम से भरा व गर्व से परिपूर्ण होने के कारण अपनों से अलग है। वह मदमाता है क्योंकि वह सर्वगुण सम्पन्न है यदि उसे पंक्ति में सम्मिलित कर लिया जाए तो उस दीप की शक्ति, महत्ता तथा सार्थकता बढ़ जाएगी। दीप व्यक्ति का प्रतीक है, कवि उसे पंक्ति में लाकर मुख्यधारा से जोड़ना चाह रहा है। दीप के लिए पनडुब्बा, समिधा, मधु, गोरस, अंकुर, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुत विश्वास तथा अमृत-पूतपय आदि उपमानों का प्रयोग किया गया है। ये सभी उपमान एक स्नेह भरे दीप के लिए पूर्णतया उपयुक्त है। पनडुब्बा के रूप में वह सच्चे मोतियों का लाने वाला है अर्थात् खतरों से खेलने वाला है, तो समिधा (यज्ञ की लकड़ी) बन कर संघर्षशील तथा दृढ़निश्चयी है। मधु एवं गोरस के रूप में माधुर्य एवं पवित्र अमृतमय दुग्ध के समान सुख देने वाला स्नेहशील, परोपकारी है। वह अंकुर की तरह स्वयं पैदा होकर विशाल सूर्य को निडरता से ताकता है, वह उत्साही है यह स्वयं ब्रहमा का रूप में अर्थात दीप (मनुष्य) स्वयं तक ही सीमित नही है। उसे सांसारिक गतिविधियों में शामिल करके सर्वजन हिताय प्रयोग में लाया जाए तो सम्पूर्ण मानवता लाभान्वित हो सकेगी। 'यह अद्‌वित्तीय यह मेरा, यह मैं स्वयं विसर्जित' पंक्ति के द्वारा कवि दीप को 'स्व' का भाव प्रदान करता हुआ कहता है कि व्यक्ति अपनी अलग पहचान बनाते हुए समाज हित में समर्पित हो जाए तो अत्याधिक श्रेयस्कर होगा। व्यक्तिगत सत्ता का यदि सामाजिक व राष्ट्रीय सत्ता में विलय हो जाए तो समाज, राष्ट्र एवं व्यक्ति सभी का उत्थान होगा।

दीप प्रकाश का, ज्ञान का तथा सभ्यता का प्रतीक है। कविता में इसे सामाजिक इकाई अर्थात व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। जब कहीं समाज में निंदा, अपमान, घृणा तथा अनादर एवं उपेक्षा का अंधकार फैलता है, तो दीप उसे प्रकाशमान कर अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में भी करूणामय होकर, द्रवित होकर, जागरूकता का परिचय देता हुआ, अनुराग से देखता हुआ, सभी को गले लगाने वाली ऊँची उठी भुजाओं वाला बनकर आत्मीयता का परिचय देता है। वह सदैव जागृत तथा श्रद्‌धा से युक्त रहता है। अंधेरे में प्रकाश की किरण बनकर निंदा, अपमान, घृणा और अवज्ञा को दूर करता है, तथा अनुकूल वातावरण तैयार करता है।

शिल्प सौन्दर्य – भाषा-खड़ी बोली, तत्सम शब्दावली, अनुप्रास अलंकार, रूपक (पनडुब्बा, समिधा, गोरस, अंकुर) लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्ति, माधुर्य एवं ओज गुण, प्रतीकात्मकता-दीप प्रतीक है व्यक्ति का, प्रगीत शैली, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

(1) दीप अकेला के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए बताइए कि उसे कवि ने स्नेह भरा, गर्वभरा एवं

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

मदमाता क्यों कहा है?

(2) 'यह अद्वितीय - यह मेरा - यह मैं स्वयं विसर्जित'' पंक्ति के आधार पर व्यष्टि के समष्टि में विसर्जन की उपयोगिता बताइए।

(3) यह दीप अकेला कविता का मूल भाव लिखिए।

(ख) व्याख्या (1) यह वह विश्वास .... पंक्ति को दे दो।

(2) यह मधु है .... पंक्ति को दे दो।

(ग) काव्य-सौदंर्य - यह प्रकृत, स्वयंभू .... पंक्ति को दे दो।

(ख) मैनें देखा, एक बूँद

मैंने देखा .... नश्वरता के दाग से।

मूलभाव :- कवि ने इस कविता के माध्यम से जीवन में क्षण के महत्व को तथा क्षणभंगुरता को प्रतिष्ठापित किया है। बूँद जब तक समुद्र में रहती है उसका कोई अस्तित्व नही होता किंतु जब वह अलग होती है तो सूर्य के स्पर्श से रंगकर सार्थक हो जाती है।

व्याख्या बिंदु :- कवि कहता है एक बूँद का सागर से अलग होने का अर्थ है कि अब उसका अस्तित्व समाप्त होने वाला है, वह शीघ्र नष्ट होने वाली है। बूँद सागर से अलग होकर स्वयं नष्ट हो जाती है, सागर नष्ट नहीं होता। समुद्र(सागर) से कवि का आशय ब्रहम से है जहाँ से बूँद रूपी जीव क्षणभर अर्थात् कुछ समय के लिए अलग होता है और कुछ रंगीन पल व्यतीत कर नश्वरता को प्राप्त होता है अर्थात् मुक्ति को प्राप्त होता है।

सागर की एक बूँद लहरों के टकराने से ऊपर उछल कर अलग हो गई। सूर्य की लालिमा में रंगकर बूँद को पुनः सागर में समाना निरर्थक प्रतीत नहीं होता क्योंकि उस एक क्षण वह अस्त होते हुए सूर्य की आग से रंग कर समाप्त हो गई, लेकिन बूँद ने क्षणभर के लिए अपनी स्वछंदता का आनंद लिया। उसने अपनी नश्वरता के दाग से मुक्ति पा ली। उसी प्रकार अपने क्षणभंगुर जीवन को परम्ब्रहम के प्रकाश से आलोकित कर मनुष्य को नश्वरता अर्थात् मृत्यु के भय से मुक्ति अनुभव करनी चाहिए।

शिल्प सौन्दर्य :- भाषा - खड़ी बोली, तत्सम शब्दावली, अनुप्रास अलंकार, बिम्बात्मकता, प्रतीकात्मकता (बूँद व्यक्ति का, सागर परम् ब्रहम का) दार्शनिक तत्व की अभिव्यक्ति, मुक्त छंद।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न 1. 'रंग गई क्षण भर ढलते सूरज की आग से' पंक्ति के आधार पर बूँद के क्षण भर रंगने की सार्थकता बताइए।

2. क्षण के महत्व को उजागर करते हुए कवित का मूल भाव लिखिए।

3. मैनें देखा एक बूँद कविता में कवि ने सत्यता के दर्शन कैसे किए है?

(ख) व्याख्या :- मैने देखा .... नश्वरता के दाग से।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

केदारनाथ सिंह
बनारस

इस शहर में .... बिल्कुल बेखबर।

मूलभाव :- केदारनाथ सिंह की कविता 'बनारस' में प्राचीनता, आध्यात्मिकता एवं भव्यता के साथ-साथ आधुनिकता का अपूर्व समन्वय है। कविता बसंत आने पर धार्मिक, सांस्कृतिक वैभव, आयोजनों एवं मिथकीय आस्थाओं का परंपराबोध कराती है।

व्याख्या बिन्दु- बनारस एक बहुत प्राचीन शहर है। पौराणिक ग्रंथों एवं दंतकथाओं मे बनारस को काशी नाम से संबोधित किया जाता है। कवि कहता है कि बनारस में बसंत का आगमन अचानक होता है। बसंत के आगमन पर लहरतारा या मडुवाडीह मोहल्लों में धूल का एक बवंडर उठता है, जिससे इस महान एवं पुराने बनारस शहर की जीभ किरकिराने लगती है। बसंत का प्रभाव दशाश्वमेध घाट के पत्थरों पर भी दिखाई देने लगता है। बसंत के आगमन और लोगों के स्नान ध्यान, पूजा-अर्चना से घाट का अंतिम पत्थर भी अपनी कठोरता छोड़ कर नरम हो जाता है। सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखो में नमी तथा भिखारियों निराश आँखो में उत्साह एवं उनके खाली कटोरों में सिक्कों की चमक दिखाई देने लगती है। घाट पर आये श्रद्धालु भिखारियों के खाली कटोरों को दानस्वरूप कुछ न कुछ देकर भर देते है। इस तरह इन कटोरों में बसंत उतरता है।

इस शहर के साथ एक मिथकीय आस्था जुड़ी हुई है कि एवं गंगा का सानिध्य पाकर मानव को जीवन मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल जाता है, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। इसलिए प्रतिदिन असंख्य शवों को अपने कंधों पर लादकर लोग बनारस की तंग गलियों से गंगा के किनारे दाह-संस्कार के लिए ले जाते है।

बनारस तीव्र गति वाला शहर नही हैं, यहाँ सभी कुछ धीमी गति से संपन्न होता है। यहाँ के निवासियों के स्वभाव में भागमभाग नही है। धीरे-धीरे कार्य करने की विशेषता ने सारे समाज को एकता के सूत्र में मजबूती से बाँध रखा है। घाट पर बँधी नाव और तुलसीदास की चरण-पादुकाओं के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है। यहाँ जो परंपराएं, आस्थाएं विश्वास, भक्ति और श्रद्धा है उनमें सैकड़ो वर्षो से कुछ भी परिवर्तन नही हुआ है। परंपरागत जीवन वैसा ही चल रहा है, जैसे चलता आया है। बनारस एक अद्‌भुत शहर है। इस की रिक्तता और पूर्णता दर्शाने के लिए कवि कहता है कि यह आधा फूल में, आधा शव में आधा नींद में आधा शंख में है। आधा होना और आधा न होना इस शहर का रहस्य

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

है। राख, रोशनी, आग, पानी, धुएँ, खुशबू और आदमी के उठे हाथों के स्तंभो के द्वारा कवि कहना चाहता है कि यह शहर आस्था के स्तंभो तथा काशी गंगा के सानिध्य में मोक्ष की अवधारणा पर खड़ा है। सैकड़ो वर्षो से यहाँ के निवासी एक पैर पर खड़े होकर साधना करते हुए अज्ञात सूर्य को अर्घ्य देते आ रहे है, अर्थात् यहाँ के लोग सदा से धर्म-कर्म में लगे हुए है। इसी से सांस्कृतिक विरासत बनी हुई है।

शिल्प सौन्दर्य :- भाषा - खड़ीबोली, **अलंकार** - अनुप्रास, पुनरूक्ति प्रकाश (रोज-रोज, धीरे-धीरे, ऊँचे-ऊँचे)मानवीकरण (बनारस का), बिम्बों का प्रयोग, लाक्षणिकता, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1:- बनारस शहर के लिए जो मानवीय क्रियाएँ इस कविता में आई हैं उनका व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए?

2. बनारस में बसंत का आगमन कैसे होता है और उसका क्या प्रभाव इस शहर पर पड़ता है?

3. खाली कटोरों में बसंत का उतरना से क्या आशय है?

4. बनारस कविता के आधार पर सिद्ध कीजिए कि आस्था, श्रद्धा, विरक्ति, विश्वास, आश्चर्य और भक्ति का मिलाजुला रूप बनारस है।

(ख) व्याख्या - जो है वह खड़ा है .... हाथों के स्तंभ।

2. अद्‌भुत है .... आधा नही है।

3. शताब्दियों से .... बिल्कुल बेखबर।

(ख) दिशा

हिमालय किधर .... किधर है।

मूलभाव- केदारनाथ सिंह द्वारा रचित यह कविता बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। बच्चे का भी अपना यथार्थ होता है।

व्याख्या बिन्दु - कवि स्कूल के बाहर पतंग उड़ाते हुए बच्चे से पूछता है कि हिमालय किधर है। पतंग उड़ाने में मस्त बच्चे से यह प्रश्न पूछना असामयिक है, फिर भी बालक स्वाभाविक रूप से उत्तर देता है कि जिधर उसकी पतंग भागी जा रही है। लेखक ने पहली बार जाना कि हिमालय किधर है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति का अपना यथार्थ होता है। बच्चे भी यथार्थ को अपने ढंग से देखते है, उस बच्चे का यथार्थ पतंग की दिशा में है। कवि बच्चे के बाल सुलभ ज्ञान पर मुग्ध हो उठता है। कवि चाहता है कि हम बच्चों से कुछ न कुछ सीख सकते है।

शिल्प सौन्दर्य - भाषा-खड़ी बोली, पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार (उधर-उधर), प्रश्न अलंकार (हिमालय किधर है?) संवादात्मक शैली, छंद मुक्त।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अभ्यास कार्य

प्रश्न 1 **:**– दिशा कविता के आधार पर बताइये कि बच्चे का उधर-उधर कहना क्या प्रकट करता है?

2. दिशा कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना यथार्थ होता है।

3. बालक पतंग की ओर हिमालय की दिशा क्यों बताता है? बाल मनोविज्ञान के आधार पर लिखिए।

4. व्याख्या – हिमालय किधर है? .... किधर है।

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

विष्णु खरे

एक कम

1947 के बाद .... रह सकते हो।

मूलभाव :- इस कविता में कवि विष्णु खरे ने स्वतंत्रता की बाद की भारतीय जीवन शैली पर प्रकाश डाला है। स्वतंत्रता के बाद लोगों ने राष्ट्रीय भावना तथा सामाजिकता को छोड़कर भ्रष्ट तरीके अपनाएं और अमीर हो गए, किंतु रह गए ईमानदार लोग जो चाय, रोटी और पैसो के लिए दूसरों के सामने हाथ फैलाने को मजबूर हैं।

व्याख्या बिन्दु :- उनका मानना है कि हमारे सेनानियों ने आजादी से पूर्व एक सच्चे, सुखी तथा शांतिप्रिय समाज की कल्पना की और इस हेतु आत्म बलिदान भी किया था। किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद क्या उनका स्वप्न साकार हो सका? अमीर बनने की होड़ में लोगों ने अपने स्वाभिमान, आत्मा की आवाज, अपने सम्मान तथा मानवीय मूल्यों (आपसी विश्वास, भाईचारा, सामूहिकता तथा समन्वय की भावना) के स्थान पर धोखाधड़ी, आपसी खींचतान तथा परस्पर वैमनस्य की भावना को अपना लिया है। लोग अशोभनीय तरीको का सहारा लेकर मालामाल, आत्मनिर्भर तथा गतिशील हो गए है यह सभ्य समाज को मान्य नही है। लोग निर्लज्ज और पतित हो गए है। इस कविता में कवि बेईमानों के बीच जी रहे एक ईमानदार व्यक्ति (कोढ़ी, कंगाल, भिखारी के माध्यम से) के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहा है। वह स्वयं को तथा भिखारी को ईमानदार के रूप में प्रस्तुत करके कुछ न कर पाने की स्थितियों में ऐसे लोगों के जीवन संघर्ष कम से कम एक व्यवधान को कम करने का प्रयास कर रहा है तथा भ्रष्टाचारियों को बेपर्दा करके एक सभ्य, शिष्ट, ईमानदार तथा प्रगतिशील समाज का निर्माण करने की प्रेरणा दे रहा है।

शिल्प सौन्दर्य – भाषा खड़ीबोली, तत्सम शब्दावली **अंलकार** – अनुप्रास (कंगाल, कोढ़ी, नंगा, निर्लज्ज निरांकाक्षी, हर होड़) संदेह अलंकार, मुहावरे का प्रयोग (हाथ फैलाना) लाक्षणिक, विशेषणों का प्रयोग, प्रतीकात्मकता, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न 1. 1947 के बाद भारतीय समाज में क्या परिवर्तन आया?

2. हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

3. 'मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंदी या हिस्सेदार नहीं' से कवि विष्णु खरे का क्या अभिप्राय है?

4. एक कम कविता के माध्यम से कवि ने स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की जीवन शैली को किस रूप में रेखांकित किया है? लिखिए।

5. बदलते परिवेश में ईमानदार व्यक्ति की छवि धूमिल होती जा रही है। – क्या आप सहमत है?

(ख) **व्याख्या** – 1947 के बाद से .... मामूली धोखेबाज

(ग) **काव्य-सौन्दर्य** – (1) कि अब जब .... बच्चा खड़ा है।

(2) मैं तुम्हारा विरोधी .... रह सकते हो।

सत्य

जब हम सत्य .... इंद्रप्रस्थ लौटते हुए।

मूलभाव :- 'सत्य' कविता में कवि ने पौराणिक संदर्भो एवं पात्रों के द्वारा जीवन में सत्य के महत्व को स्पष्ट करना चाहा है। कवि कहना चाहता है कि हम जैसे समाज में जीवन यापन कर रहे है, उसमें सत्य की पहचान करने में तथा उसे पाने में कितने असमर्थ सिद्ध हो रहे हैं, यह बताना उतना ही कठिन है, जितना सत्य को पकड़ पाना।

व्याख्या बिन्दु :- कवि कहता है कि सत्य केवल पुकारने से प्राप्त नहीं हो सकता, इसे प्राप्त करने के लिए कठोर तप और साधना करनी पड़ती है, उसके प्रति निष्ठावान होना पड़ता है। उसे अनुभव करना व पहचानना पड़ता है। कविता में विदुर सत्य का प्रतीक हैं और युधिष्ठिर सत्य के प्रति निष्ठावान व्यक्ति का। सत्य को पाने के लिए ही युधिष्ठिर विदुर को पुकार रहे थे। महाभारत का यह प्रसंग बताता है कि सत्य कटु और नग्न होता है उसका सामना होने पर मन विचलित होने लगता है। सत्य के प्रति मन में निष्ठा होनी चाहिए तभी सत्य का साक्षात्कार होने पर उसका आलोक, उसकी शक्ति हमारी आत्मा में समाहित हो सकेगी। कवि कहता है कि सत्य कभी दिखाता है और कभी ओझल जाता है। सत्य का रूप वस्तु-स्थिति, घटनाओं और पात्रों के अनुसार बदलता रहता है। जो एक व्यक्ति के लिए सत्य है, आवश्यक नहीं कि दूसरे व्यक्ति के लिए भी वह सत्य ही हो। इसीलिए सत्य की पहचान और उसकी पकड़ अत्यंत कठिन होती है। युधिष्ठिर सत्य के प्रति दृढ़ संकल्पी थे, इसी कारण वे सत्य को प्राप्त कर सके। सत्य और संकल्प का संबंध आवश्यक है। दृढ़ संकल्प शक्ति से ही सत्य को आत्मा की शक्ति के रूप में पहचाना जा सकता है। संकल्प के अभाव में सत्य को नहीं पाया जा सकता।

शिल्प सौन्दर्य :- भाषा-खड़बोली, अंलकार-अनुप्रास (हटता जाता, देखती दृष्टि, प्रकाश-पुंज), पुनरूक्ति प्रकाश (बार-बार, धीरे-धीरे, कभी-कभी), मानवीकरण (सत्य शायद जानना चाहता है), उदाहरण (युधिष्ठिर जैसा, प्रकाश जैसा), रूपक (प्रकाश-पुंज), विरोधाभास (न पहचानने में पहचानते हुए), छंद मुक्त।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न 1 :- सत्य हमसे परे क्यों और किस प्रकार हटता चला जाता है?

2. सत्य का दिखना और ओझल होने से कवि का क्या तात्पर्य है?

3. सत्य और संकल्प के परस्पर संबंध पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

4. सत्य बोलना, सत्य सुनना, सत्य को सहन करना और सत्य का पालन करना आज के बदलते परिवेश में अत्यंत मुश्किल क्यों है?

(ख) व्याख्या

(1) जब हम सत्य को .... वे नहीं ठिठकते।

(2) हम कह नहीं सकते .... इंद्रप्रस्थ लौटते हुए।

(ग) काव्य-सौन्दर्य

(1) हम कह नहीं सकते .... उसी को छुअन है।

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

रघुवीर सहाय

वसंत आया

जैसे बहन 'दा'...................................... बसंत आया।

मूलभाव :- 'वसंत आया' कविता में कवि ने आज के मनुष्य की आधुनिक जीवन-शैली पर व्यंग्य किया है। मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता टूट गया है। वसंत ऋतु का आना अब अनुभव करने के बजाय कैलेंडर से जाना जाता है।

व्याख्या बिंदु :- वसंत के आगमन के विषय में कवि कहता है कि सुबह की सैर करते समय किसी बंगले के आगे लगे अशोक वृक्ष पर कोई चिड़िया छोटी बहन की तरह चहचहाएं तथा सड़क के किनारे पेड़ों से गिरे पीले-सूखे पत्ते पैरों के नीचे चरमराएं तथा खिली हुई हवा फिरकी की तरह झूमती हुई, गरम पानी में नहाई हुई सी आये तो समझ लेना चाहिए कि वसंत आ गया है। कैलेंडर की तिथि देखकर तथा दफ्तर में छुट्टी होने के कारण वसंत पंचमी आने का प्रमाण मिल जाता है। इस कविता में कवि की चिंता है कि मनुष्य आधुनिकता एवं अतिव्यस्तता के कारण प्रकृति और मौसम में आने वाले परिवर्तनों से अनभिज्ञ हो गया है। प्रकृति के सौंदर्य, हरियाली, पुष्प, कोयल, भौरें, रंग, रस, गंध, आम के बौर तथा ढाक के दहकते वनों आदि से कटता जा रहा है।

शिल्प-सौन्दर्य :- भाषा – खड़ीबोली, देशज (तद्‌भव) शब्दों और क्रियाओं का प्रयोग, अनुप्रास अलंकार (पियराये पत्ते, हुई हवा............), पुनरूक्ति प्रकाश (बड़े-बड़े, चलते-चलते), उपमा (गरम पानी से नहाई, फिरकी-सी) मानवीकरण, (खिली हुई हवा), बिबों का प्रयोग, प्रकृति चित्रण, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

प्रश्न :- 1. 'वसंत आया' कविता में कवि की चिंता क्या है?

2. रघुवीर सहाय ने वसंत आया कविता के माध्यम से मनुष्य की किस जीवन शैली को व्यंग्य का निशाना बनाया है और क्यों?

3. प्रकृति मनुष्य की सहचरी है, इस विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए?

(ख) व्याख्या – और यह कैलेंडर .... वसंत आया।

(ग) काव्य सौन्दर्य – ऐसे किसी बंगले .... चली गई।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

तोड़ो

तोड़ो तोड़ो तोड़ो .... गोड़ो गोड़ो गोड़ो।

मूल भाव - 'तोड़ो' उद्‌बोधन कविता हैं। इसमें कवि सृजन हेतु भूमि को तैयार करने के लिए चट्टाने, ऊसर और बंजर को तोड़ने का आह्‌वान करता है। मन के भीतर की ऊब भी सृजन में बाधक हैं कवि उसे भी दूर करने की बात करता है।

व्याख्या बिंदु - चरती, परती, धरती को ऊर्वरा ऊबरा बनाने के लिए पत्थर, चट्‌टानों, बंजर-ऊसर को तोड़ना पड़ता है। इसी प्रकार मन मे व्यापत ऊब और खीज को तोड़ना पड़ता है। धरती में पत्थर और चट्‌टान तथा मन के भीतर की ऊब और उदासी सृजन में बाधक है। धरती को खेती योग्य बनाने के लिए खोदने-पाटने, गुड़ाई-बुवाई करने की आवश्यकता है। इसी तरह मन में व्याप्त खीज को बाहर निकालने पर सृजन होगा। मन की ऊब और खीज रचनात्मकता में बाधक है। इस कविता के माध्यम से कवि विध्वंस के लिए नहीं सृजन के लिए प्रेरित कर रहा है। वह मानव-मन की खीज और ऊब को उसके मन से निकाल कर नए सृजन के लिए तैयार करना चाहता है।

शिल्प सौन्दर्य - भाषा-खड़ीबोली, अलंकार - पुनरूक्ति प्रकाश (तोड़ो-तोड़ो, आधे-आधे, गोड़ो-गोड़ो), रूपक (मन के मैदानों में), प्रतीको और बिबों का प्रयोग, छंद मुक्त।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न

1 - तोड़ो कविता में 'पत्थर' और चट्‌टान किसके प्रतीक है?

2. कवि को धरती और मन की भूमि में क्या-क्या समानताएँ दिखाई पड़ती है?

3. कविता का प्रारंभ तोड़ो तोड़ो तोड़ो से हुआ है और अंत गोड़ो गोड़ो से विचार कीजिए कवि ने ऐसा क्यों किया?

4. 'तोड़ो' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

(ख) **व्याख्या** - तोड़ो तोड़ो तोड़ो .... आधे आधे गाने।

(ग) **काव्य सौन्दर्य** - ये ऊसर बंजर .... गोड़ो गोड़ो गोड़ो।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्राचीन कवि
तुलसीदास

भरत-राम का प्रेम

(1) पुलकि सरीर .... पिआसे नैन ।।

व्याख्या बिंदु :- प्रस्तुत छंद कवि तुलसीदास कृत रामचरितमानस के अयोध्या कांड का अंश है। राम वन गमन के उपरान्त भरत के मनोभाव का वर्णन है। अपने प्रभु श्री राम के विषय में बोलते समय उनका शरीर पुलक से भर जाता है और नेत्र अश्रु पूरित हो उठते है। वह श्री राम के स्वभाव की चर्चा करते हुए कहते है कि उनका हृदय कोमल और निर्मल है। उनके व्यक्तित्व की विशेषताएं बताते हैं कि वे अपराधी पर भी क्रोध नहीं करते, खेल में स्वयं हार कर मुझे जिताते है। ऐसा करना मेरे प्रति उनके प्रेम और अनुराग का परिचायक है। बचपन से ही उन्होनें मेरा साथ दिया है। भरत कहते है कि मेरे नेत्र सदा श्री राम के दर्शन के लिए लालायित रहते है।

2) विधि न सकेउ .... मुनि रघुराउ।।

व्याख्या बिन्दु : भरत भाव विभोर हो कर कहते है कि संभवत: ईश्वर के लिए मेरे प्रति श्रीराम का प्रेम असहनीय था, इसी कारण उन्होंने माता के दुर्व्यवहार को बहाना बना हम दोनों को अलग कर दिया। माता की कुबुद्धि के कारण ही राम वन गए। भरत कहते हैं कि माता के प्रति अभद्र विचार और अपशब्द सर्वथा अनुचित है। अपने चरित्र का सही आकलन स्वयं कठिन है। चरित्र की पवित्रता का निर्णय अन्य ही करते है। माता को अधम और स्वयं को उत्तम मानना अनुचित है। जिस प्रकार कोदो की बाली से उत्तम धान उत्पन्न नहीं हो सकता और घोंघा श्रेष्ठ मोती को जन्म नही दे सकता, उसी प्रकार दुराचारी माता के गर्भ से चरित्रवान सदाचारी पुत्र का जन्म संभव नहीं है। श्री राम और मेरे अलगाव का कारण मेरे पूर्व जन्म के पाप कर्म हैं। माता के साथ बुरा व्यवहार और अपशब्दों का प्रयोग कर मैनें उन्हें दुखी और पीड़ित किया है। मेरे उद्धार का एक मात्र साधन मेरे गुरू और श्रीराम है। मेरे वचनों की सत्यता और पवित्रता से मुनि विशिष्ठ और श्री राम परिचित है।

3) भूपति मरन .... सहावइ काहि।।

व्याख्या बिन्दु :- राम के वन गमन के पश्चात् सब दुखी है। भरत माताओं और अयोध्या वासियों के दुख का मूल कारण स्वयं को मानते हैं। राजा दशरथ ने राम वियोग में प्राण त्याग दिए। राजा की

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

मृत्यु और माता की कुबुद्धि का साक्षी समस्त संसार है। राम के वनवास के कारण अयोध्या के नागरिक विरह अग्नि में जल रहे है। मेरे कारण ही श्री राम, लक्ष्मण और सीता मुनि का वेष धारण कर वन को चले गए, वे बिना पादुका पैदल चले गए। भगवान् शंकर इस बात के साक्षी है कि मैं सब के दुख का कारण होने पर भी जीवित हूँ। निषाद राज की भक्ति और श्रद्धा को जानकर भी मेरा कठोर हृदय नहीं पिघला। श्री राम के प्रताप से मार्ग में आने वाले सर्प और बिच्छु भी अपना विष त्याग देते है।

ऐसे दयालु, श्री राम लक्ष्मण और सीता के साथ शत्रुता का व्यवहार किया उस कैकेयी के पुत्र भरत को ईश्वर अवश्य दंड देगा।

शिल्प सौन्दर्य :-

भाषा-अवधी, चौपाई दोहा छंद, भक्ति भावना, नीरज नयन (रूपक, अनुप्रास)

अनुप्रास अलंकार :- खेल खुनिस, स्नेह संकोच, मातुभंदि, साधु सुचि (अनुप्रास)

मुकता .... काली (दृष्टांत अलंकार)

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न

1 :- 'मैं जानऊँ निज नाथ सुभाऊ' में राम के चरित्र की किन किन विशेषताओं का उल्लेख है?

2. राम के प्रति अपने श्रद्धा भाव तथा अनन्य भक्ति को भरत ने किस प्रकार व्यक्त किया है?

3. 'महीं सकल अनरथ कर मूला' पंक्ति के आधार पर भरत की मनोदशा स्पष्ट कीजिए।

4. सब के दुख का कारण भरत किसे मानते है और क्यों?

ख) व्याख्या

पुलकि समीर .... पिआसे नैन।।

ग) काव्य सौन्दर्य

1) फरह कि कोदव बालि सुसाली
मुकता प्रसव कि संबुक काली।।

2) पुलकि समीर सभा भए ठाढ़े।
नीरत नयन नेह जल बाढ़े।।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पद

1) जननी निरखति .... प्रीति सिखी सी।।

व्याख्या बिंदु :- प्रस्तुत पद तुलसीदास कृत गीतावली से है। राम वन गमन के पश्चात् माता कौशल्या की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया गया है। राम के शैशव काल की जूतियाँ, धनुष बाण आदि को देखकर माता कौशल्या का दु:ख बढ़ जाता है। वह उन्हें के बार बार अपने हृदय से लगाती है। उनके कक्ष में जाकर वह यह कहकर जगाने लगती है कि अनुज और सखा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं उठों और अपने भाइयों, मित्रों के साथ मिलकर अपनी रूचि का भोजन ग्रहण करो। राम को कमरे में न देख अचानक राम वन गमन प्रसंग के स्मरण से वह दु:ख वेदना के कारण, स्तब्ध और चित्रवत् हो जाती है।

माता कौशल्या की दशा नृत्य में मग्न उस मोरनी की भांति हैं जो नृत्य के अंत में अपने पैरों को देखकर रोने लगती है। भाव यह है कि माँ कौशल्या की विरह वेदना का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है।

2. राधौ एक .... बड़ो अंदेसो।।

व्याख्या बिंदु :- प्रस्तुत पद में अश्व के बहाने माता कौशल्या की वेदना का मार्मिक मित्रण है। किस प्रकार अश्वों को देखने के बहाने अयोध्या लौटने को कहती हैं। वास्तव में माता राम को देखने मिलने की आकांक्षी है। राम के प्रिय अश्वों की दु:खी अस्वस्थ अवस्था उनकी चिंता का कारण है। माता कौशल्या कहती हैं जिन अश्वों की देखभाल तुम स्वयं अपने कर-कमलों से करते थे तुम्हारे स्पर्श के अभाव में उनकी दशा हिमपात हुए कमल के समान है। माता कौशल्या पथिक से अनुरोध करती हैं कि वन में यदि राम से भेंट हो तो उन्हें अश्वों की दशा से अवगत करा देना।

शिल्प सौन्दर्य :- भाषा ब्रज, अलंकार-अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश (बार-बार) उपमा (चित्र लिखी सी, सिखी सी), रूपक (कर-पंकज), उत्प्रेक्षा (तदापि......हिम मारे)

अभ्यास कार्य

क) 1. राम वन गमन के उपरान्त राम के शैशव काल की वस्तुओं को देखकर माता कौशल्या की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

2. 'रहि चकि चित्रलिखी सी' पंक्ति में माता की करुण दशा की अभिव्यक्ति है। स्पष्ट कीजिए।

ख) **व्याख्या-**

1. जननी निरखति .... सिखी सी।।

ग) **काव्य सौन्दर्य-**

1. कबहुं समुझि .... प्रीति सिखी सी।।

2. राघौ एक .... बार-बार चुचकारी।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

जायसी

बारहमासा

1. अगहन मास .... धुआं, हम लाग।।

व्याख्या बिंदु :- प्रस्तुत छंद सूफी कवि जायसीकृत प्रबंधकाव्य 'पद्मावत' के बारह मासा का अंश है। इसमें नागमति की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण है। अगहन महीने की विशेषताएँ बताते हुए नागमति पर उसके प्रभाव की अभिव्यक्ति है। शीतऋतु के इस माह की रात लम्बी और दिन छोटा होता है। प्रियतम के वियोग में नागमति को दिन भी रात की ही भांति दुखदायी प्रतीत होती है। विरह वेदना असहनीय है। उसका शरीर विरह अग्नि में जलकर भस्म हो रहा है। नागमति का रूप, रंग, यौवन और सौन्दर्य प्रिय के साथ चला गया। शीत से बचने के लिए जगह-जगह जलाई गई आग नायिका के शरीर को और मन को दग्ध कर रही है। नागमति की इस अवस्था से, उसकी वेदना से, रत्नसेन (नागमति का पति) अनभिज्ञ है। विरह अग्नि का धुआँ लगने के कारण उसका शरीर काला पड़ गया है। वह भँवरे और काग से अपने प्रिय तक उसका संदेश पहुँचाने का अनुरोध करती है कि नायिका विरह में जल गई है और उसके धुँए से वे काले पड़ गए हैं।

2. पूस जाड़....... समेटहु पंख।

व्याख्या बिन्दु- पूस मास की शीत में विरह के कारण नागमति की मरणासन्न अवस्था की अभिव्यंजना है। शीत का प्रभाव बढ़ गया है, सूर्य के ताप में भी कमी प्रतीत होती है। इस समय शीत और पति वियोग के कारण नागमति का हृदय कांप रहा है। बिस्तर भी हिमालय समान ठंडा/बर्फीला हो गया है। भयंकर सर्दी से बचने का एक मात्र उपाय प्रिय से मिलन है। नागमति का कहना कि चकवा और चककी केवल रात को वियोग में रहते है, प्रातः उनका पुनः मिलन हो जाता है। मेरा और प्रिय का मिलन नहीं होता। इस अवस्था में जीवित रहना कठिन है। विरह रूपी बाज, मुझ निरीह पर झपटने के लिए तत्पर है। शरीर का सारा रक्त अश्रु बन बह गया है। नागमति पति से मरणासन्न विरही पक्षी के (अपने) पंखों को समेटने का आग्रह करती है। प्रिय मिलन की उत्कट इच्छा की अभिव्यक्ति है।

3. लागेउ माँह............... उड़ावा झोल।।

व्याख्या बिन्दु - माघ महीने में नागमति की विरह अवस्था, उसके दुख, वियोग की अभिव्यक्ति है। माघ महीने की भयंकर सर्दी (पाला पड़ने वाली) का चित्रण किया गया है। अत्याधिक शीत से बचने का एक मात्र उपाय प्रिय मिलन है, जो कि सूर्य के ताप के समान है। जिस प्रकार माघ महीने में फूलों में रस भरना आरंभ होता है, उसी प्रकार मेरा हृदय भी भावनाओं से ओत-प्रोत है। नागमति प्रियतम से भ्रमर रूप में आकर मिलने का आग्रह करती है। शीत के कारण नेत्रों से बहते अश्रु ओले के समान प्रतीत होते हैं। हवा चलने से गीले वस्त्र बाण की भांति चुभ रहे हैं। पति वियोग में नागमति न तो किसी प्रकार का श्रृंगार करती है और न ही आभूषण धारण करती है। विरह वेदना के कारण शरीर दुर्बल, तिनके की भांति हल्का हो गया है। जिसे विरहाग्नि जलाकर राख की भाँति उड़ाना चाहती है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

4. फागुन पवन .... धरैं जहँ पाउ।।

व्याख्या बिंदु- फागुन मास में नागमति के विरह की चरम सीमा की अभिव्यक्ति है। प्रिय मिलन की उत्कट इच्छा एवं उनके प्रति अनन्य प्रेम की अभिव्यंजना है। मिलन के इस मौसम में विरह असहनीय है। नागमति का शरीर पत्तों के समान पीला पड़ गया है। पौधे नवीन पत्तों और कोंपलों से भर रहे हैं। लोग परस्पर फाग खेल रहें हैं, गायन और नृत्य में मग्न हैं। सभी का हृदय उल्लास से भरा हुआ है। नागमति को ऐसा प्रतीत हो रहा है कि होली उसी के हृदय में जल रही है। उसका शरीर जल कर राख हो गया है। उसे इस बात का कोई दु:ख नहीं है। वह पवन से अनुरोध करती है कि मेरे शरीर की राख को उड़ा कर प्रिय के मार्ग में बिछा दे, राख पर चलने से मुझे चरण स्पर्श का अनुभव होगा।

शिल्प सौन्दर्य-

भाषा अवधी, चौपाई दोहा छन्द, सूफी काव्य की मसनवी शैली, विप्रलंभ श्रृंगार रस (वियोग श्रृंगार) अलंकार-अनुप्रास, उत्प्रेक्षा (जरै विरह बाती, जानहू सेज हिमवचल बूढ़ी) उपमा (तन जस मोरा, क्रेन नीरू) रूपक (बिरह सैचान, विरह पवन), विरोधाभास (सियरि अग्नि) नागमति के विरह का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन।

विशेष- बारह मासा में रत्नसेन और नागमति के लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम (आत्मा-परात्मा के मिलन) की अभिव्यंजना है।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न

1. अगहन मास में नागमति की विरह दशा का वर्णन कीजिए।
2. नागमति किसको और क्यों अपना संदेशवाहक बनाती है?
3. माघ महीने में विरह असहनीय क्यों है तथा नागमति की अवस्था कैसे हो गई है?
4. फागुन मास में नागमति किससे और क्या अनुरोध करती है? इस अनुरोध से उसकी किस भावना का परिचय मिलता है?
5. चकवा और चकवी के उदाहरण से नागमति की किस व्यथा की अभिव्यक्ति हुई है?
6. वृक्षों से पत्तियाँ तथा वनों से ढाखे किस माह में गिरते हैं इससे विरहिणी का क्या संबंध है?

ख) काव्य सौन्दर्य

1. सियरि अग्नि .... धुआँ हम लाग।।
2. बिरह सैचान .... नहीं छाँड़ा।।
3. रकत ढरा .... समेटुं पंख।।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

4. पिय सौं .... धुआँ हम लाग।। 5.

5. यह तन जारौं.................... धरैं जहँ पाउ।।

6. तुम्ह बिन्दु .... उड़ावा झोल।।

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

विद्यापति

पद

1. के पतिआ .... कातिक मास।।

व्याख्या बिन्दु – प्रस्तुत पद में सावन मास में नायिका की विरह वेदना का चित्रण है। कृष्ण गोकुल त्याग मथुरा चले गए हैं। विरहिणी राधा अपनी सखी से पूछती है कि क्या कोई ऐसा नहीं है जो पिया तक मेरा संदेश ले जाए। श्री कृष्ण जाते समय मेरा हृदय अपने साथ ले गए हैं। नायिका का हृदय वियोग के असह्य दुःख को सहन नहीं कर पा रहा है। नायिका को लगता है कि उसके दारूण दुःख पर जगत विश्वास नहीं करेगा। ऐसे में कवि विद्यापति राधा को धैर्य और आशा धारण करने के लिए कहते हैं। और उसे विश्वास दिलाते हैं कि कार्तिक मास में उनका मिलन अवश्य संभव होगा।

2. सखि हे.......... मीलल एक।

व्याख्या बिन्दु – नायिका कहती हैं कि प्रेम के अनुभव और आनन्द के प्रतिक्षण नूतन स्वरूप वर्णनातीत है। आजीवन कृष्ण दर्शन पर भी नेत्र अतृप्त हैं। उनकी मधुर वाणी, को सुनने के लिए कान सदा उत्सुक रहते हैं। वाणी/वचनों और प्रेम की चिर नवीनता के कारण अनुभव सम्पूर्ण नहीं है। मिलन की तीव्र इच्छा सदा बनी रहती है। प्रेम का वास्तविक स्वरूप जानना कठिन है। विद्यापति कहते हैं कि लाखों व्यक्तियों में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसका प्रेमानुभव सम्पूर्ण है, अर्थात वह तृप्त है। प्रेम में पूर्ण संतोष असंभव है क्योंकि प्रेमानुभूति नित्य नवीन होती है।

3. कुसुमित कानन .... लखिमादेइ–रमान।।

व्याख्या बिन्दु– सखी राधा की विरह वेदना का वर्णन उनके प्रियतम कृष्ण के सामने कर रही है। कमल मुखी सुन्दरी राधा खिले फूलों को देखकर आँखे मूँद लेती है तथा कोयल की मधुर आवाज को सुनकर कान ढक लेती है। मिलन के प्रतीक दृश्य राधा के लिए कष्टदायी है। राधा का शरीर कृष्ण वियोग में अत्यंत दुर्बल और शक्तिहीन हो गया है। अश्रु पूरित नेत्र प्रतिपल कृष्ण की प्रतीक्षा करते हैं। विरह में राधा का शरीर कृष्ण पक्ष की चौदस के चांद के समान क्षीण हो गया है।

विद्यापति कहते हैं राजा शिवसिंह विरह के प्रभाव से परिचित हैं, इसी कारण लाखीमा देवी के साथ रमण करते हैं।

शिल्प सौन्दर्य

भाषा मैथिली, वियोग श्रृंगार रस, माधुर्य गुण।,अलंकार – अनुप्रास, यमक (हरि-हर), रूपक (कमल मुखी), उपमा (चौदसि चांद समान) परिकर (गुन सुंदरि), विरोधाभास (लाख...... गेल) राधा के विरह का, उसकी मनोदशा का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन।

अभ्यास कार्य

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

क) 1. राधा के दु:ख का कारण क्या है?

2. कोयल और भ्रमर के कलरव का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता है?

3. राधा के प्राण तृप्त न होने का क्या कारण है?

ख) व्याख्या-

1. जनम अवधि .... परस न गेल।।

2. कुसुमित कानन .... झांपइ कान।।

ग) काव्य सौन्दर्य-

1. मोर मन .... अपजस लेल।।

2. तोहर बिरह .... चौदसि चांद समान।।

3. कुसुमित कानन .... झांपइ कान।।

4. सेह पिरिति अनुराग .... नूतन होय

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

केशवदास

रामचंद्रिका

(क) दंडक

बानी जगरानी .... तदपि नई नई।

व्याख्या बिन्दु – प्रस्तुत पंक्तियों में केशवदास ने माँ सरस्वती की उदारता और वैभव का गुणगान किया है। देवी सरस्वती की उदारता अपरंपार है उसे शब्दों में बांध कर सीमित नहीं किया जा सकता। वह सदैव नयापन लिए हुए है। अत: न तो कोई उसका गुणगान कर सका है, न कर सकता है और न कोई कर सकेगा। यह करने में देवता, सिद्ध, ऋषिराज, अनुभवी, तपस्वी भी हार चुके हैं। चार मुख वाले ब्रह्मा जी, पांच मुख वाले शिवजी तथा षट्मुख कार्तिकेय (पति, पुत्र तथा नाती)हैं। वे भी उनकी महिमा का वर्णन नहीं कर पाये क्योंकि माँ सरस्वती की उदारता हर क्षण हर पल नए-नए रूपों में परिवर्तित होती है। उनकी उदारता अपरिमित है इसलिए उसका वर्णन असंभव है।

ख. लक्ष्मण-उर्मिला

सब जाति फटी .... जटी पंचवटी।

व्याख्या बिन्दु- इस छंद में कवि ने पंचवटी के माहात्मय का सुंदर वर्णन किया है। लक्ष्मण और उर्मिला के संवाद द्वारा पंचवटी के सात्विक वातावरण का चित्रण करते हुए कवि कहता है कि यहाँ आने पर दु:खों का निवारण होता है। कपटी और धूर्त व्यक्ति निष्कपट और सदाचारी बन जाते हैं, पापियों के पाप नष्ट हो जाते हैं। ज्ञान की प्राप्ति होती है। प्राकृतिक सौन्दर्य से सुख की प्राप्ति तथा मोक्ष का आनंद उत्पन्न होता है। कवि कहता है कि पंचवटी शिव की जटाओं के समान कल्याणकारी है।

ग) अंगद

सिंधु तर यो .... लंका जराई-जरी।

व्याख्या बिन्दु- इन पंक्तियों में मंदोदरी (रावण की पत्नी) द्वारा श्री रामचंद्र के बल, महिमा एवं प्रताप का वर्णन किया गया है। मंदोदरी अपने पति रावण से सीता जी को श्री राम के पास वापस भेजने का अनुरोध करती है किंतु रावण हठी होने के कारण सीता जी को श्रीराम के पास वापस भेजने को तैयार नहीं था। अत: मंदोदरी रावण को उलाहना देकर उसे श्रीराम के बल एवं प्रताप का आभास करा रही है। वह कहती है कि उनके वानर अर्थात् हनुमान ने समुद्र लांघ लिया, लक्ष्मण द्वारा सीता की रक्षा के लिए खींची गई रेखा को रावण नहीं लांघ सका, रावण हनुमान को बाँध नहीं सका, श्री राम की सेना ने समुद्र बाँध कर पुल बना लिया। तुमने (रावण ने) हनुमान की पूँछ को जलाना चाहा वह तो संभव न हो सका पर लंका जल गई। मंदोदरी के कहने का तात्पर्य यह है कि रावण, श्रीराम के समाने तुम्हारा बल और प्रताप बहुत कम है अत: तुम सीता को वापस भेज दो।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

शिल्प सौन्दर्य- भाषा- ब्रजभाषा, तत्सम् शब्दावली, **अलंकार**-अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, अतिशयोक्ति, यमक (धूजटी जटी) रूपक- (दुख की दुपटी, अघऔघ की बेरी), सवैया छंद।

अभ्यास कार्य

प्रश्न क)

1. माँ सरस्वती की उदारता किसी से भी क्यों नहीं बखानी गई?
2. चारमुख, पांच मुख और षटमुख किन्हें कहा गया है? और उनका देवी सरस्वती से क्या संबंध है?
3. कविता में पंचवटी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है?
4. 'तेलनि तूलनि पूंछि जरी न जरी, जरी लंक जराई-जरी' के साथ कौन सी घटना जुड़ी है?

ख) व्याख्या-

बानी जगरानी .... तदपि नई नई।।

ग) काव्य सौन्दर्य-

1. सब जाति .... छूटी चटी।
2. अघऔघ की बेरी .... जटी पंचवटी।।
3. तेलनि तूलनि .... लंक-जराई-जरी।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

घनानंद

(क) कवित्त

बहुत दिनान .... सुजान को।।

व्याख्या बिन्दु – इस कवित्त में कवि अपनी प्रेयसी सुजान से मिलने की अभिलाषा प्रकट कर रहा है। बहुत दिन तक प्रेयसी के आने की प्रतीक्षा करते-करते तथा उस छबीले मनभावन के शीघ्र आने की सूचना जैसी झूठी बातों पर विश्वास करने से कवि उदास हो गया है। कवि के 'चाहत चलन ये संदेसों ले सुजन को' कहने से तात्पर्य यह है कि सुजान के दर्शन की अभिलाषा में कवि के प्राण अधरों तक आकर अटक गए हैं क्योंकि यह सुजान के आगमन की सूचना लेने के पश्चात ही प्रस्थान करना चाहते है।

आनाकानी आरसी .... कान खोलि है।

व्याख्या बिंदु- प्रस्तुत कवित्त में कवि नायिका से कहता है कि तुम कब तक मिलने में आनाकानी करती रहोगी। मुझमें और तुममें एक प्रकार की होड़-सी चल रही है। कवि मौन होकर यह देखना चाहता है कि सुजान कब तक कवि को प्रति उत्तर न देने के प्रण का पालन कर सकती है। कवि को पूर्ण विश्वास है कि उसके हृदय की 'कूक भरी मूकता' नायिका को बोलने के लिए बाध्य कर देगी। कवि मुहावरेदार भाषा में प्रेयसी की निष्ठुरता पर व्यंग्य करता है कि वह कब तक कानों में रुई डालकर बैठी रहेगी, कभी तो उसकी पुकार उसके कानों तक पहुँचेगी।

शिल्प-सौंदर्य- भाषा- ब्रजभाषा, अनुप्रास अलंकार, पुनरुक्ति प्रकाश, श्लेष (सुजान और घनआनंद), मुहावरों का प्रयोग (कूक भरी मूकता), (पैज पड़ी, रुई दिए रहोगै), वियोग श्रृंगार रस, कवित्त छंद।

(ख) सवैया

तब तौ छवि .... बीच पहार परे।

व्याख्या बिंदु – प्रस्तुत सवैये में कवि ने विरह और मिलन की अवस्थाओं की तुलना की है। कवि कहता है कि संयोग के समय में तो हम तुम्हें देखकर जीवित रहते थे, अब वियोग में अत्यंत व्याकुल रहते हैं। कवि कहता है कि संयोग की अवस्था में जो नेत्र पहले तो प्रेयसी सुजान के सौन्दर्य-रस का पान करके जिया करते थे, वही वियोग की अवस्था में सोच-सोच कर जले जा रहे है, अर्थात् संयोगकाल में नेत्र तथा हृदय अति प्रसन्न रहते थे और अब वियोग के समय वे दुःख के कारण जले जा रहे हैं। सुजान के बिना सुख के सभी साजो-सामान व्यर्थ लग रहे हैं। जहाँ संयोग की अवस्था में हार भी पहाड़ के समान मिलन में बाधक लगता था वहीं वियोगावस्था में प्रेम के मध्य पहाड़ (अनेक व्यवधान, बाधाएँ) आ गए हैं।

पूरन प्रेम को .... बांचि न देख्यौ।

व्याख्या बिंदु- प्रस्तुत सवैये में कवि ने अपनी प्रेयसी सुजान को पत्र लिखकर उसके प्रति प्रेम का

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रकटीकरण किया है। उस पत्र में कवि ने प्रेयसी के चरित्र के सुन्दर स्वरूप का विशेष रूप से चित्रण किया था। कवि ने हृदय रूपी प्रेम पत्र पर किसी अन्य कथा का उल्लेख तक न किया। ऐसे हृदय रूपी पत्र को जब अपनी प्रेयसी सुजान को सप्रेम भेंट किया तो प्रेयसी सुजान ने उसे पढ़कर भी नहीं देखा और अनजान की तरह टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

शिल्प-सौन्दर्य- भाषा- ब्रजभाषा, अलंकार-अनुप्रास, यमक (तोष- आनंद, संतोष), श्लेष (घन आनंद व सुजान), रूपक (हियो हितपत्र), वियोग श्रृंगार रस, मुहावरों का प्रयोग, सवैया छंद।

अभ्यास कार्य

(क) प्रश्न

1. घनानंद ने "चाहत चलन से संदेसो लै सुजान को" क्यों कहा है?
2. कवि मौन होकर प्रेमिका के कौन से प्रण पालन को देखना चाहता है?
3. पठित सवैये के आधार पर बताइये प्राण पहले कैसे पल रहे थे और अब क्यों दुखी हैं?
4. कवि घनानंद ने किस प्रकार की पुकार से 'कान खोलिहैं' की बात की है?

(ख) व्याख्या-

1. बहुत दिनान को .... लै सुजान को।।
2. पूरन प्रेम को .... बांचि न देख्यौ।
3. आनाकानी आरसी .... कान खोलिहैं।।

(ग) काव्य-सौन्दर्य-

1. अधर लगे हैं आनि .... लै सुजान को।
2. रुई दिए रहोगे .... कान खोलिहैं।
3. जब तौ छवि .... महादु:ख दोष भरे।
4. तब हार पहार .... पहार परे।
5. सो घनआनंद .... बांचि न देख्यौ।

Downloaded from www.studiestoday.com